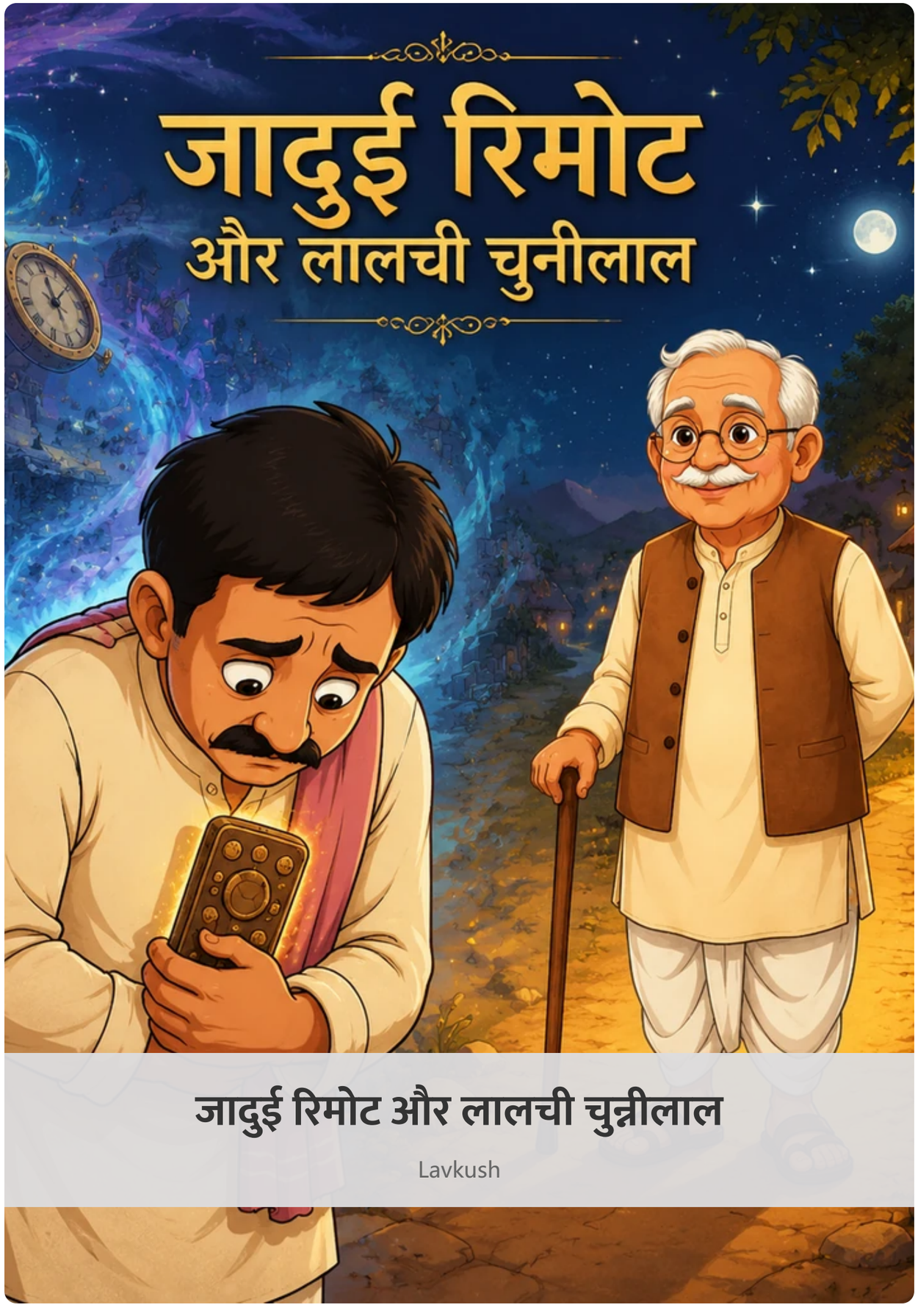

जादुई रिमोट और लालची चुन्नीलाल

Lavkush

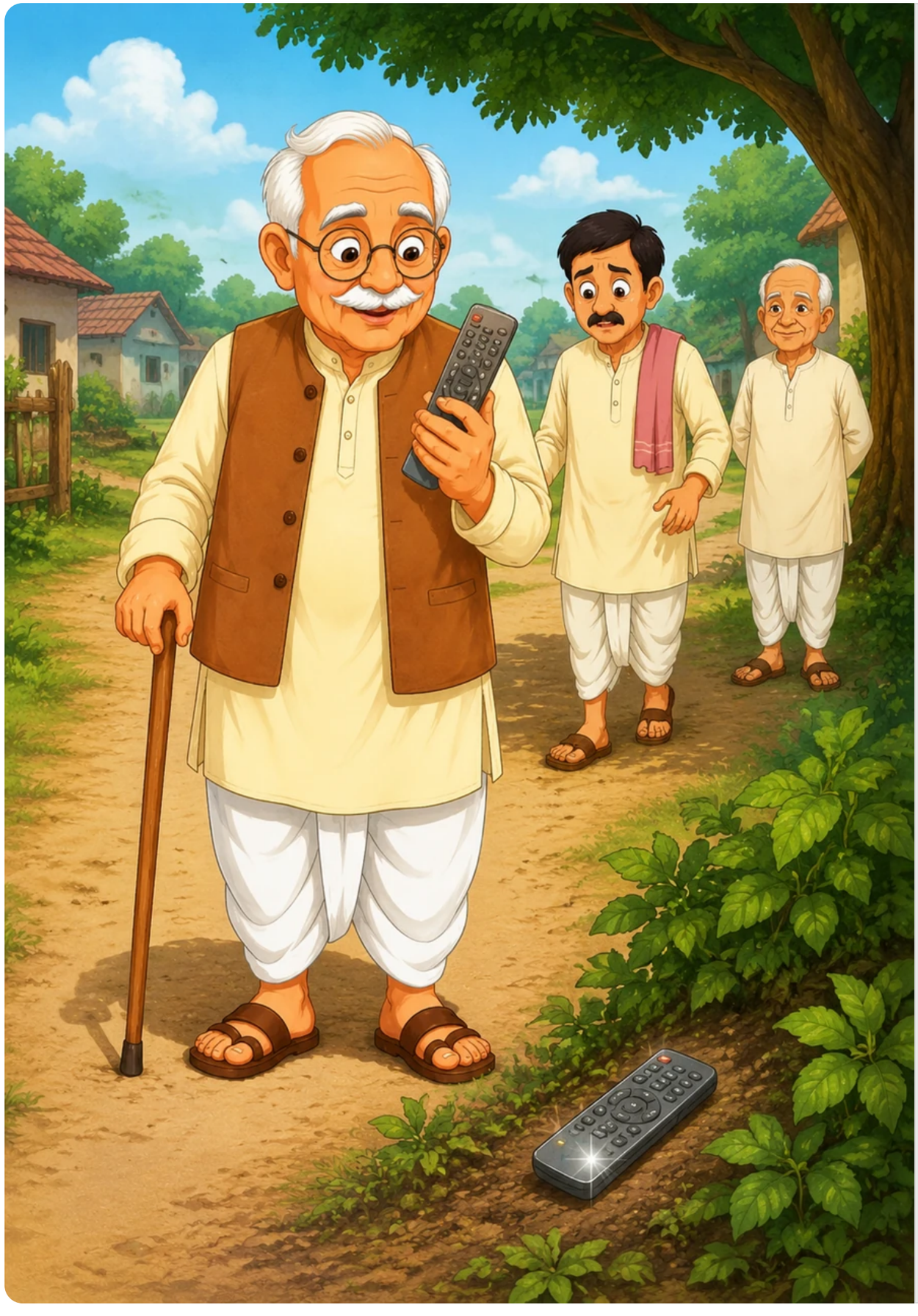

हरि दादा गाँव की धूल भरी पगडंडी पर टहल रहे थे, तभी उनकी नज़र झाड़ियों के पास पड़े एक पुराने और चमकते हुए रिमोट पर पड़ी उन्होंने उसे उत्सुकता से उठा लिया और सोचने लगे कि यह अनोखी चीज़ यहाँ कहाँ से आई होगी।

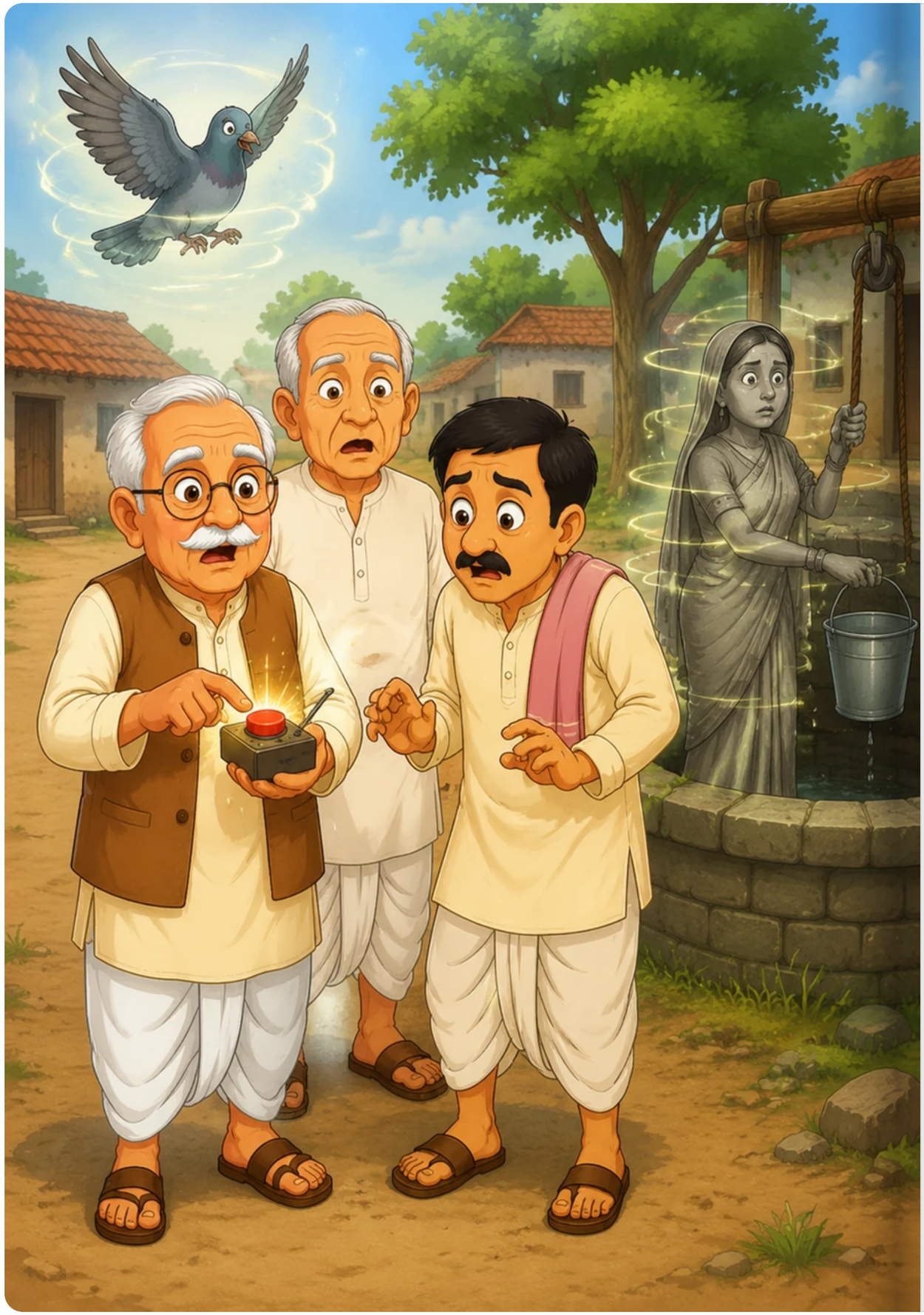

हैरानी में आकर उन्होंने रिमोट का बड़ा लाल बटन दबा दिया औ तभी एक चमत्कार हुआ। अचानक पूरा गाँव एक पल में ठहर गया—ह में उड़ता पक्षी रुक गया और कुएँ से पानी भरती महिला पत्थर की मूर्ति जैसी बन गई।

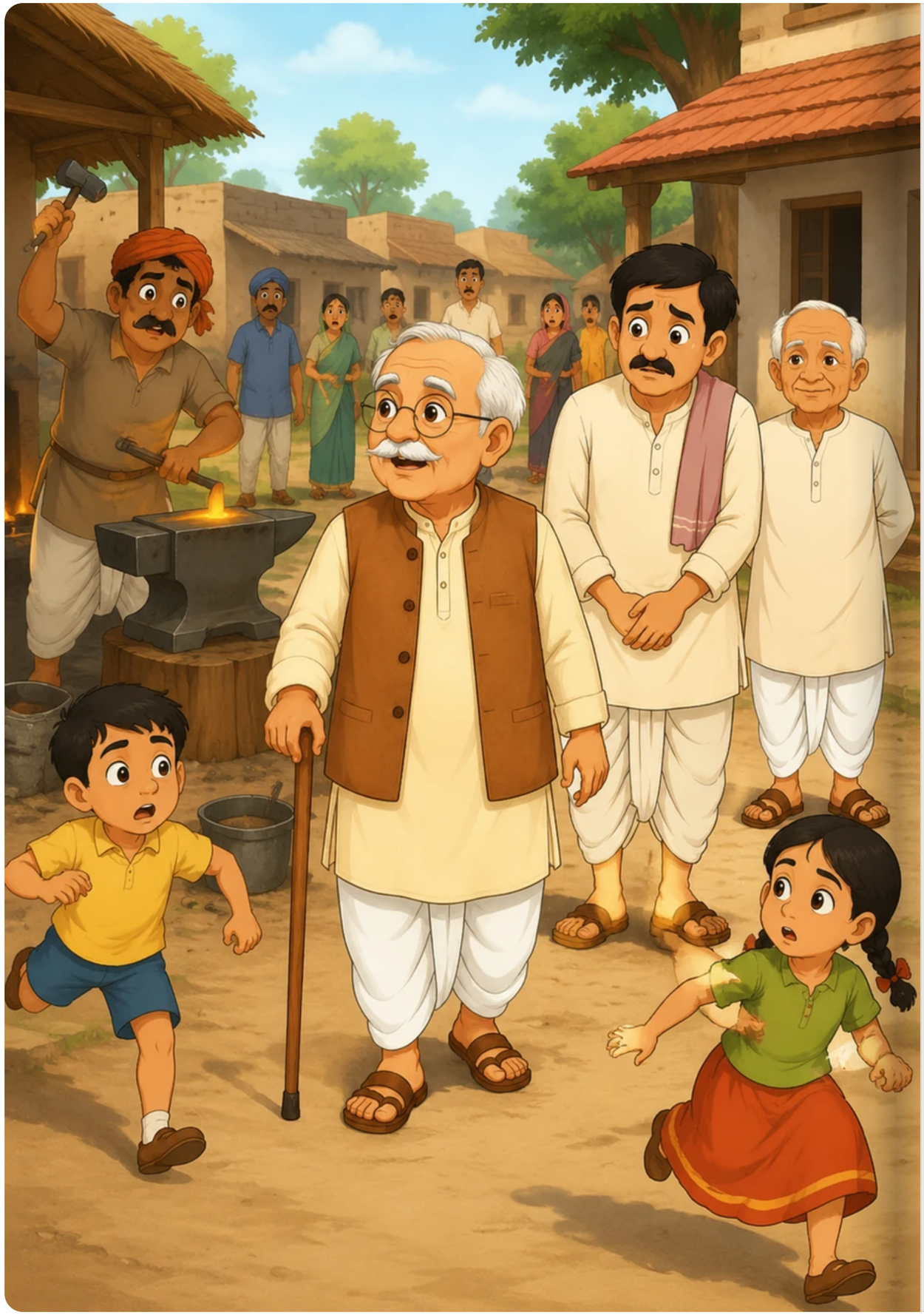

हरि दादा हैरानी से गाँव के बीच से गुजरे जहाँ सब कुछ थम चुक था। लोहार का हथौड़ा हवा में लटका था और गलियों में दौड़ते बच्चे अप जगह पर ऐसे जम गए थे जैसे कोई तस्वीर हो।

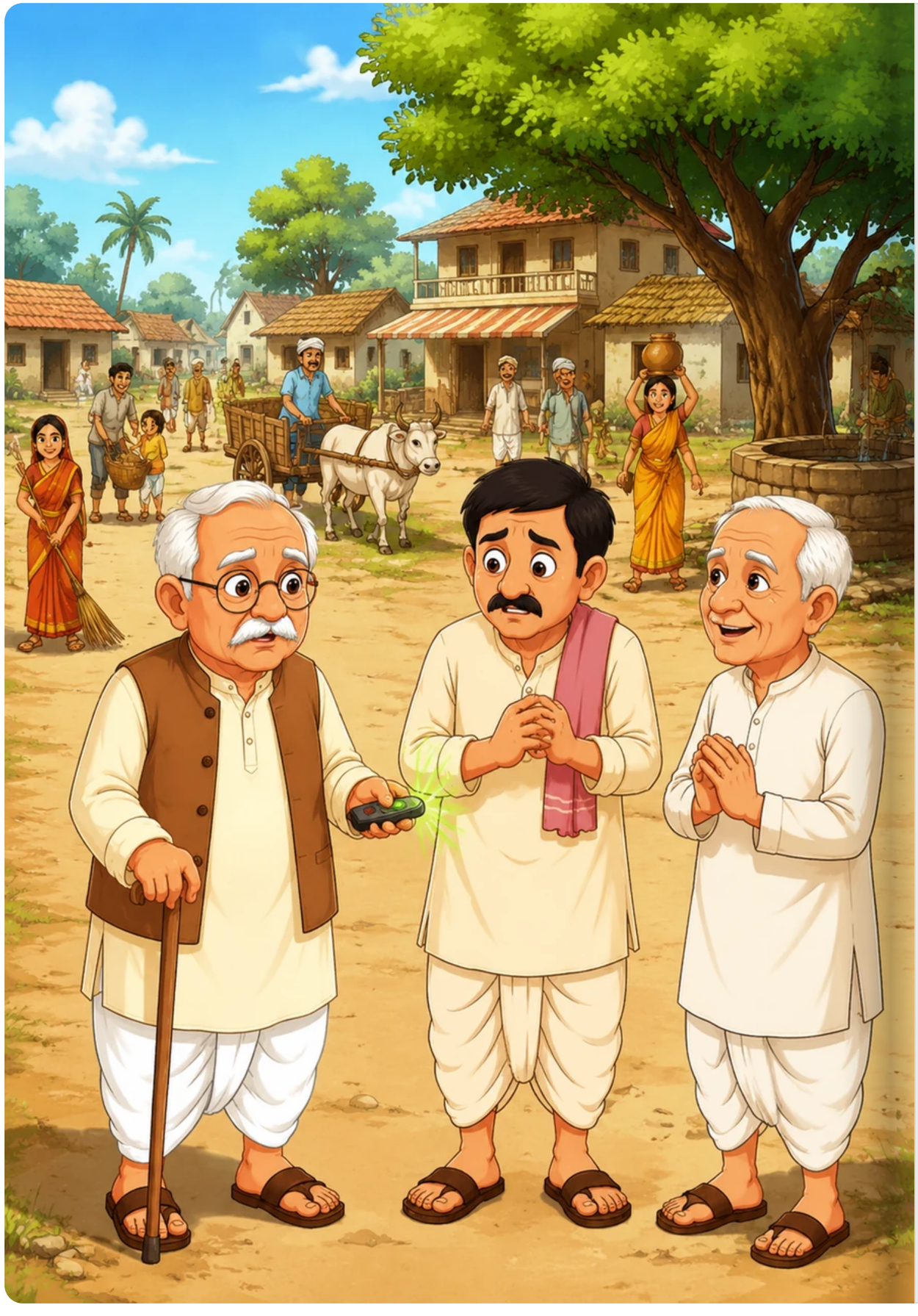

थोड़ा घबराकर हरि दादा ने जल्दी से रिमोट का हरा बटन दबाया। देखते ही देखते गाँव फिर से ज़िंदा हो उठा और चारों ओर लोगों की आवाज़ें और काम का शोर फिर से गूँजने लगा।

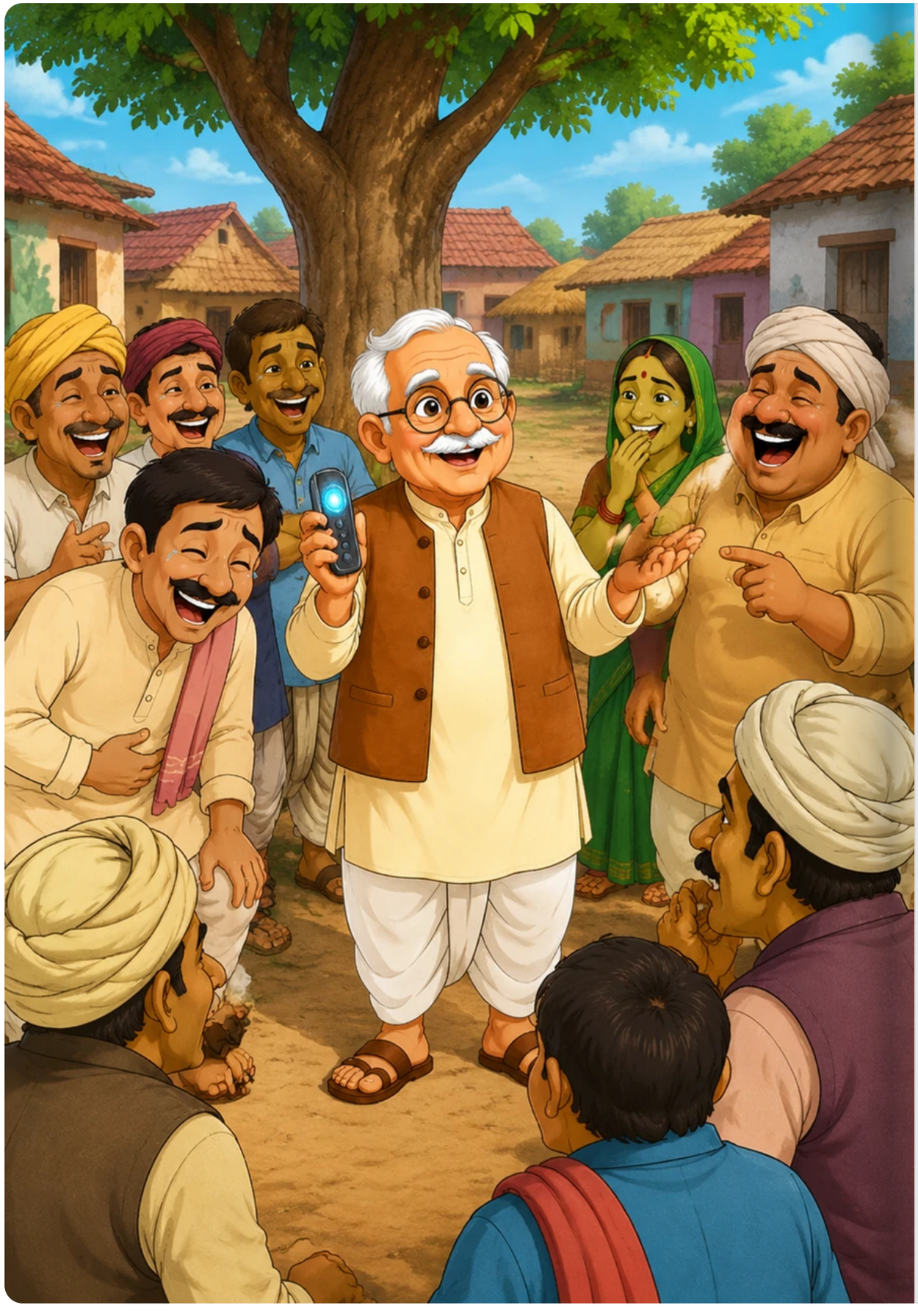

हरि दादा ने गाँव के चौक पर सबको इस जादुई रिमोट के बारे
बताया, लेकिन किसी ने उनकी बात पर यकीन नहीं किया। सबने इस
एक बूढ़े आदमी की कल्पना समझकर हँसी में उड़ा दिया।

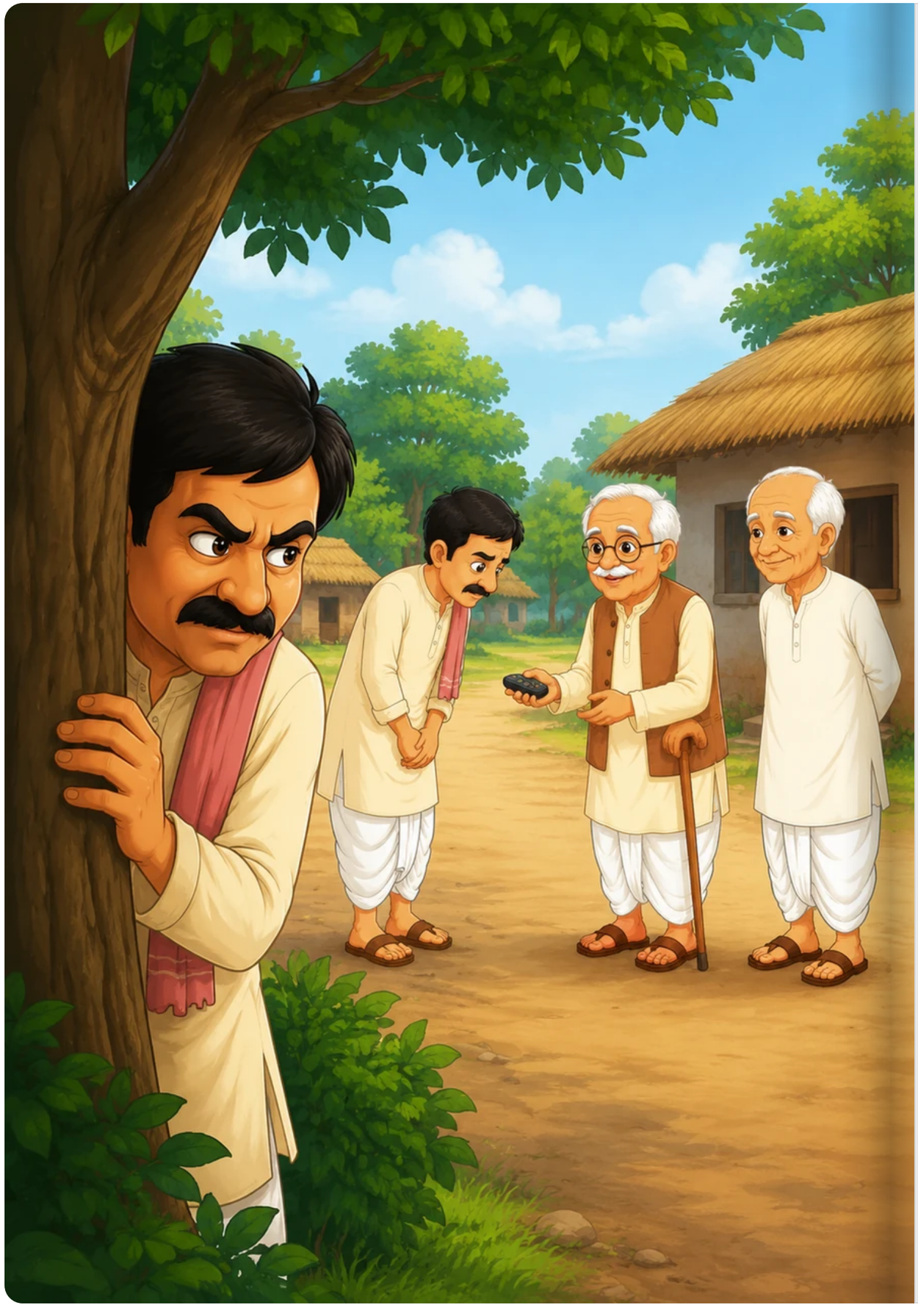

गाँव का एक लालची आदमी चुन्नीलाल पेड़ के पीछे छिपकर सब देख रहा था। उसने सोचा कि अगर वह इस रिमोट को चुरा ले, तो वह गाँव को रोककर सारा खज़ाना और कीमती चीज़ें आसानी से ले सकेगा।

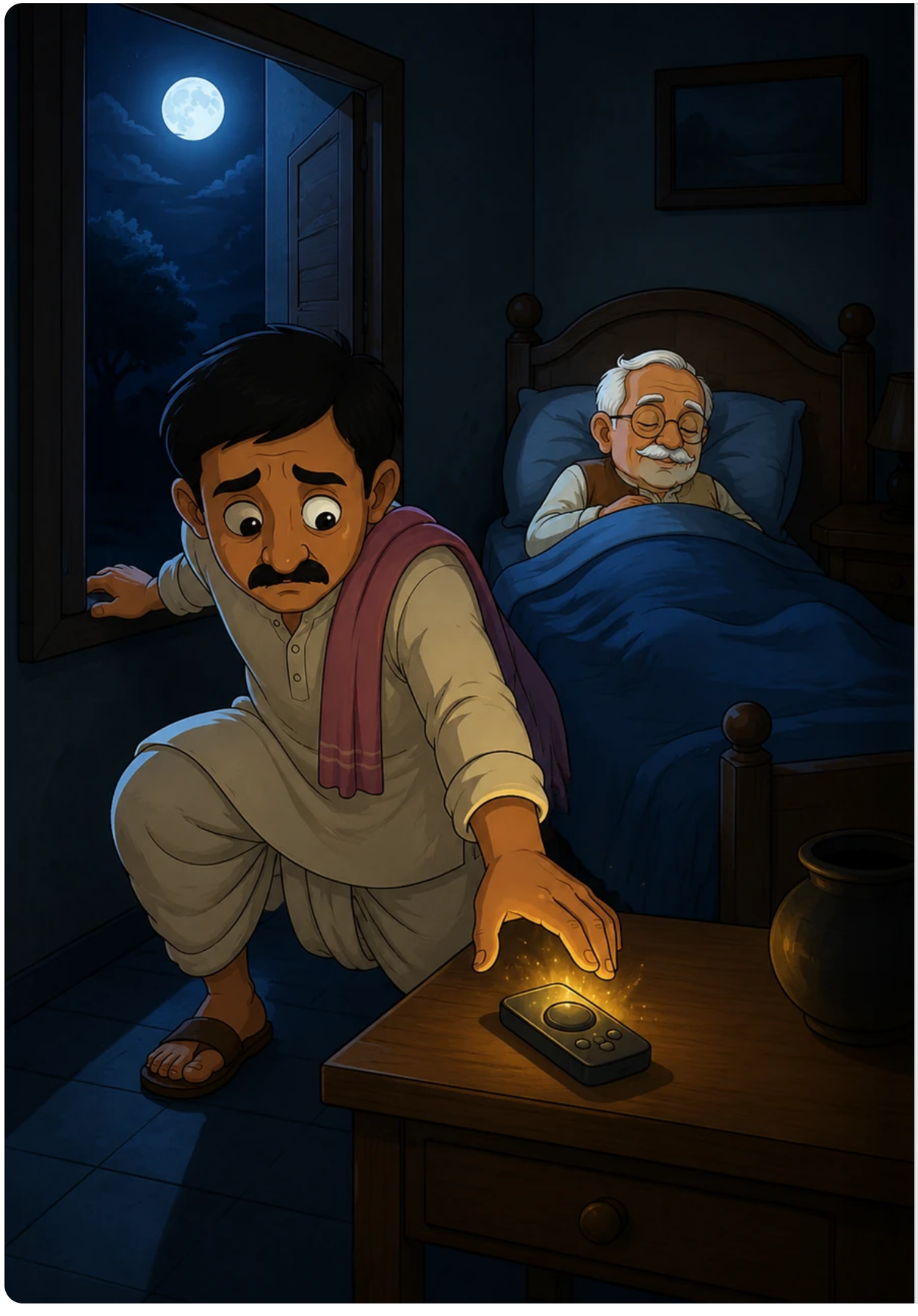

उस रात जब हरि दादा गहरी नींद में सो रहे थे, चुन्नीलाल चुपके उनके घर की खिड़की से अंदर घुसा। उसने मेज़ पर रखा वह जादुई रि धीरे से उठाया और अंधेरे में गायब हो गया।

चुन्नीलाल गाँव के पुराने मंदिर के पास पहुँचा जहाँ उसे लगा कि खज़ाना छिपा है। उसने अपनी आँखों में लालच लिए रिमोट का लाल बटन पूरी ताकत से दबा दिया।

लेकिन अचानक रिमोट से ज़ोरदार चिंगारियाँ निकलीं और उसमें
काला धुआँ उठने लगा। रिमोट एक बेकार प्लास्टिक का टुकड़ा बन ग
और मंदिर के पास दिखने वाला खज़ाना भी अचानक गायब हो गया।

अगली सुबह हरि दादा ने उदास चुन्नीलाल को देखा और धीमे स्
मुस्कुराते हुए बोले कि जादू लालच के लिए नहीं बल्कि भलाई के लि
होता है। चुन्नीलाल ने शर्मिंदगी से अपना सिर झुका लिया और उसे अप
गलती का अहसास हुआ।